कनकधारास्तवं

वंदे वंदारु मंदार मिंदिरानंद कंदलं / अमंदानंद संदोह बंधुरं सिंधुराननं // १

अंगं हरेः पुलकभूषण माश्रयंती / भृंगांगनेव मुकुळाभरणं तमालं /
अंगीकृताखिल विभूतिरपांगलीला / मांगळ्यदास्तु मम मंगळदेवतायाः // २

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः / प्रेमत्रपाप्रणि हितानि गतागतानि /
मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या/ सा मे श्रियं दिशतु सागर संभवायाः // ३

विश्वामरेंद्र पद विभ्रम दान दक्षं / आनंद हेतुरधिकं मुरविद्विषोपि /
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्थं / इंदीवरोदर सहोदरमिंदिरायाः // ४

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदामुकुंदं / आनंद कंदमनिमेषमनंग तंत्रं /
आकेकरस्थित कनीनिक पक्ष्म नेत्रं / भूत्यै भवेन्मम भुजंग शयांगनायाः // ५

कालांबुदाळि ललितोरसि कैटभारेः / धाराधरे स्फुरति या तटिदंगनेव /
मातुस्समस्त जगतां महनीय मूर्तिः / भद्राणि मे दिशतु भार्गव नंदनायाः // ६

बाह्वंतरे मुरजितः श्रितकौस्तुभे या / हारावळीव हरिनीलमयी विभाति /
कामप्रदा भगवतोपि कटाक्षमाला / कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः // ७

प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत् प्रभाते / मांगळ्य भाजि मधु माथिनि मन्मथेन /
मय्यापदेत्तमिह मन्थरमीक्षणार्थं / मंदालसं च मकरालय कन्यकायाः // ८

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणांबु धारां / अस्मिन्नकिंचन विहंग शिशौ विषण्णे /
दुष्कर्म घर्ममहनीय चिराय दूरं / नारायण प्रणयनी नयनांबु वाहः // ९

इष्टाविशिष्ट मतयोपि नराय याद्राग् / दृष्टास्त्रिविष्टप पदं सुलभं भजंते /
दृष्टिः प्रहृष्ट कमलोदर दीप्तिरिष्टां / पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर विष्टरायाः // १०

गीर्देवतेति गरुडध्वज सुंदरीति / शाकंभरीति शशिशेखर वल्लभेति /
सृष्टि स्थिति प्रळय केळिषु संस्थिता या / तस्यै नमस्त्रिभुवनैक गुरोस्तरुण्यै // ११

श्रुत्यै नमोस्तु शुभ कर्म फल प्रसूत्यै / रत्यै नमोस्तु रमणीय गुणार्णवायै /
शक्यै नमोस्तु शतपत्र निकेतनायै / पुष्ट्यै नमोस्तु पुरुषोत्तम वल्लभायै // १२

नमोस्तु नाळीक निभाननायै / नमोस्तु दुग्धोदधि जन्म भुम्यै //
नमोस्तु सोमामृत सोदरायै / नमोस्तु नारायण वल्लभायै // १३

नमोस्तु हेमांबुज पीठिकायै / नमोस्तु भूमंडल नायिकायै /
नमोस्तु देवादि दया परायै / नमोस्तु शाङ्र्गायुध वल्लभायै // १४

नमोस्तु देव्यै भृगु नंदनायै / नमोस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै /
नमोस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै / नमोस्तु दामोदर वल्लभायै // १५

नमोस्तु कांत्यै कमलेक्षणायै / नमोस्तु भूत्यै भुवन प्रसूत्यै /
नमोस्तु देवादिभिरर्चितायै / नमोस्तु नंदात्मज वल्लभायै // १६

संपत्करणि सकलेंद्रिय नंदनानि / साम्राज्य दान निरतानि सरोरुहाक्षि /
त्वद्वंदनानि दुरिताहरणोद्यतानि / मामेव मातरनिशं कलयंति मान्ये // १७

श्री कटाक्ष समुपासना विधिः / सेवकस्य सकलार्थ संपदः /
संतनोति वचनांग मानसैः / त्वां मुरारि हृदयेश्वरीं भजे // १८

सरसिज निलये सरोज हस्ते / धवळतमां शुक गंध माल्य हस्ते /
भगवति हरि वल्लभे मनोज्ञे / त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्यं // १९

दिग्घस्तिभिः कनक कुंभ मुखावसृष्ट / स्वर्वाहिनी विमल चारु जल प्लुतांगीं /
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष / लोकाधिनाथ गृहिणीं अमृताब्धि पुत्रीं // २०

कमले कमलाक्ष वल्लभे त्वं / करुणापूर तरंगितैरपांगैः /
अवलोकय मामकिंचनानां / प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः // २१

बिल्वाटवी मध्य लसत्सरोजे / सहस्र पत्रे सुख सन्निविष्टां /
अष्टापदांभोरुह पाणि पद्मां / सुवर्ण वर्णां प्रणमामि लक्ष्मीं // २२

कमलासन पाणिना ललाटे / लिखितामक्षर पंक्तिमस्य जंतोः /
परिमार्जय मातरंघ्रिणा ते / धनिक द्वार निवास दुःख दोग्ध्रीं // २३

अंभोरुहं जन्म गृहं भवत्याः / वक्षःस्थलं भर्तृ गृहं मुरारेः /
कारुण्यतः कल्पय पद्मवासे / लीलागृहं मे हृदयारविंदं // २४

स्तुवंति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं / त्रयीमयीं त्रिभुवन मातरं रमां /
गुणाधिका गुरुतर भाग्य भाजिनो / भवंति ते भुवि बुध भाविताशयाः // २५

फलश्रुतिः
सुवर्णधारा स्तोत्रं यच्छंकराचार्य निर्मितं / त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं स कुबेर समो भवेत् //